Imprint

DITF BULLETIN

वर्ष-3
अंक-28
अप्रैल -2023

OUR MOTTO
Sharing is Caring

DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION

Amalgamation of Learning
kaleidoscope of thoughts and vision

DITF

DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION INITIATIVE

APRIL EDITION

संपादक

डॉ. तरुणा दाधीच

फाउंडर प्रेसिडेंट

देवेश दाधीच

प्रकाशक

शोभा दाधीच

E-mail- dadheech@ditfindia.org

'प्रसन्नता एक कला

प्रसन्नता हम मानव प्राणियों में पाई जाने वाली भावनाओं में सबसे सकारात्मक भावना है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि हम जिस चीज के बारे में सोचते हैं हम उसकी ओर उतना ही खींचते जाते हैं यद्यपि वे हमारी सोच से मिल न खाती हो तब भी, क्योंकि हमारा मस्तिष्क सदैव उन विचारों की ओर चलता है, ना कि उन विचारों से बचता है। हमारा मस्तिष्क एक चुंबक के समान है । खुशियों और प्रसन्नताओं के बारे में सोचना उनकी प्राप्ति का कारण बनती है हमें यह बात ध्यान रखना आवश्यक है कि योग्य विचारों का चयन और उसे अपनी आत्मा में स्थान देना अच्छे अनुभूति कारण है। और ऐसे ही योग्य विचारों की श्रंखला जो हमें महर्षि दधीचि द्वारा प्रदत्त है उसे आगे बढ़ाने का कार्य हमारी टीम और युवा वर्ग पूर्ण निष्ठा से संपादित कर रहे हैं हमारी पाठक मनीषा दाधीच जी का कहना है कि "डीआईटीएफ युवाओं के लिए प्लेटफार्म तैयार कर रहा है उन्हें आगे बढ़ने में सहयोग दे रहा है। स्वास्थ्य से ऊपर उठकर अपने समाज के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करना हमें हमारे पूर्वज महर्षि दधीचि ने सिखाया है और आप उनका शब्दश: पालन कर रहे हैं इसके लिए साधुवाद।। दाधीच समाज चित्तौड़गढ़ द्वारा यशवंत जी दाधीच के कुशल नेतृत्व में और उनके सहयोग से महादानी भगवान दधीचि जी के अस्थिदान दिवस फाल्गुनी पूर्णिमा पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, आप सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्यक्रम में सहयोगी बने अतः आप सभी बधाई के पात्र हैं वही महर्षि दधीचि के जीवन पर बनी फिल्म का जानकी प्रसाद शर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट सुजानगढ़ व गुजरात दाधीच परिषद परिवार अहमदाबाद द्वारा प्रीमियर शो का आयोजन किया गया । ये हैं हमारी प्रसन्नता के कारण, हमारी प्रसन्नता के मूलभूत उदाहरण जो हमारे समाज को दिशा निर्देश तो दे ही रहे हैं और प्रत्येक वर्ग में प्रसन्नता का प्रसार कर रहे हैं। इस प्रसन्नता का आप भी हिस्सा बन सकते हैं, डीआईटीएफ के किसी भी कार्यक्रम में भाग लेकर या कोई नए विषय पर अपने विचार व्यक्त कर। आपका स्वागत है। सफलता प्राति के मूलमंत्रों हेतु मैं धन्यवाद करना चाहुँगी डॉ. संतोष व्यास जी का जिन्होंने इस अंक हेतु अपना अतिथि आलेख लिखा।

शुभम् भवतु।।

शुभम् भवतु।।

संपादक की कलम से......

डॉ.तरुणा दाधीच
मुख्य संपादक

SUBSCRIBE TO OUR VIDEOS ON YouTube

डीआईटीएफ के यू-ट्यूब चैनल को सब्सक्राइब कर आप सभी कार्यक्रम देख सकते हैं।

BLOOD COMPONENT SEPARATION
Shot on OnePlus
By Harshit Dadhich

APHERESIS ROOM
BLOOD COMPONENT SEPARATION
दाधीच
आप कैमरे की नज़र में हैं

दाधीच
Shot on OnePlus
By Harshit Dadhich

Shot on OnePlus
By Harshit Dadhich

Dadheech International Trade Foundation

नमस्कार

डीआईटीएफ ने हमारे लोगों के लिए **चंपू-काव्य (चंपू-काव्य)** शैली में कहानी कहने की पहल की शुरुआत की।

कृपया ध्यान दें कि चंपू शब्द का अर्थ कविता और गद्य का संयोजन है। एक चंपू-काव्य में गद्य (गद्य-काव्य) और कविता मार्ग (पद्य काव्य) का मिश्रण होता है, जिसमें गद्य वर्गों के बीच छंद होते हैं।

आपको अपना वीडियो (8 मिनट से अधिक नही) अपने संक्षिप्त परिचय से शुरू करना होगा और यह कि आप डीआईटीएफ की चंपू-काव्य कहानी कहने की पहल में भाग ले रहे हैं।

आप संस्कृत, मारवाड़ी, हिंदी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में पाठ कर सकते हैं।

शीर्ष तीन वीडियो को 750/- रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

CA Devesh Dadheech, Founder President DITF

www.ditfindia.org ditfindia@gmail.com
Dadheech International Trade Foundation

9867066252

mkp0496@gmail.com

Best wishes message from
below put in our all bulletin issues:

MANJU KAMAL PODDAR

AMFI CERTIFIED
MUTUAL FUND DISTRIBUTOR

504 D, SUMIT SAMARTH ARCADE,
B WING, AAREY ROAD, GOREGAON
WEST,MUMBAI – 400104.

The Secret of Success

- Director of R&D with American MNC in India.
His specialization is value creation through technology.

Every year at the start of new year we wish each other very "Successful" & "Happy" New Year. Honestly, have we ever thought what's exactly meant by being successful. Is the success directly correlated to our happiness in life...? Do we believe that we will be happy if we are successful in achieving what we are aspiring for...? Let me leave these questions as food for thought for the readers..!

Let's begin with simplistic definition that Success is achieving the Goal that we have set for ourselves...! for example It could be getting Top rank for student, or could be earning big money for individual, may be being famous for some of us... it could be being in power for politician...and many more. Everyone works towards it ...but why only few succeed at it ...? Let's understand what's the secret of achieving what we are aiming for.

Our Vedanta philosophy says that human mind has constant tendency to delve in the past or in worries of future. This results in our inability to focus on things that we are doing in present. It keeps us busy in string of meaningless activities that tires us without actual physical work. So the first element that will lead us to be success is to have ability to Concentrate on the task at hand in present. Once we learn to concentrate, we need to do it regularly. So many times, in our lives we find that we are able to concentrate but very soon we get distracted by other tasks. We fail to execute our concentration on consistent basis. Let's take an example that we are striving to get in better shape by exercising everyday. Why we don't succeed in it because ...we put our best effort for few days but lack consistency over the period of time. We start focusing on outcomes rather than actions. This leads us to again loose focus and result in failure. So the second element of being successful is Consistency of focus.

Today we live in a world that is interdependent on each other. Our success depends on how well we interact with the world around us. We are able to do our task because somebody is there to help us. This help extended by other person in turn helps him to achieve his own goal. This is truly symbiotic relationship. If we keep only seeking in relationship instead of giving back... would that work...? Certainly not. Thus, the third important element of being successful is spirit of living in Collaboration.

Today when I look at successful journey of DITF, I can find all 3 elements of success here. I see there is complete concentration on connecting our samaj without any expectation of return. The effort is being consistent for past 2 years. There are so many activities that are consistently keeping us connected and this entire effort is through collaboration between Shri Deveshji, DITF team and participant samaj at large. I see this is still a beginning and have no doubt that this will become a big driving force for our Dadhich samaj in years to come. I wish team DITF a grand success and very Happy and Successful Hindu New Year to All of you...!

S.GOPAAL SHARMA

+91 97866 84456
gopaal@luckshmiyarn.com

LUCKSHMI

YARN IMPEX PVT LTD

COTTON YARN FABRICS

LAXMI

YARN IMPEX

COTTON YARN FABRICS

Flat A2, SLS Luxury Apartment, 188, Sambandam Road (E),
R.S. Puram, Coimbatore - 641 002, Tamil Nadu, India
Flat A3, SLS Luxury Apartment, 188, Sambandam Road (E),
R.S. Puram, Coimbatore - 641 002, Tamil Nadu, India

T: +91 422 2544456 / 4370371 / 4358371

देश के प्रति समर्पण के भाव से होकर गुजरता है

'अग्निवीर' का 'अग्निपथ'

योगेन्द्र शर्मा
"टेक्सटाइल वर्ल्ड" भीलवाड़ा (राज.)

विश्व में सर्वाधिक युवाओं की जनसंख्या वाला देश अपनी तरुणाई के चरित्र और संस्कार में देश के प्रति समर्पण के मूल तत्त्व को प्रखर करने की सोच पर कदम बढ़ा रहा है। भारतीय सेना में चार वर्ष वर्दी धारण करने का अवसर 'अग्निपथ' है और इस पर चलने वाले नौजवान 'अग्निवीर' कहलाएँगे। 18 से 25 वर्ष की अवस्था उम्र का वह कालखंड है, जिसमें युवा अपने जीवन निर्माण की दिशा तय करता है। इसी समय में विद्यार्थियों के मानसिक धरातल में आवश्यक अथवा परिस्थितिजन्य परिवर्तन होते हैं। इसी पथ से गुजरकर 25 प्रतिशत युवा फौज की सेवा के लिए चयनित होकर सैनिक वर्दी के वेश में आगे भी देश की सेवा कर सकेंगे। कुछ लोगों द्वारा इस योजना का तथाकथित तौर पर विरोध करने के बावजूद देश के लाखों विद्यार्थी इस योजना के माध्यम से सेना में जाने हेतु आवेदन कर रहे हैं। इस व्यवस्था परिवर्तन में समय की मांग का दृष्टिकोण देश की सेना को अपेक्षाकृत युवा स्वरूप में दृष्टिगत कर रहा है। कई प्रकार के नकारात्मक और विरोधात्मक तथ्यों के बावजूद ऐसा लगता है कि यह योजना देश के अधिकाधिक युवा वर्ग के सपनों को साकार करने वाली योजना साबित होगी। इसकी पात्रता प्रशिक्षण और वेतन आदि के संबंध में विभिन्न आवश्यक जानकारियाँ इस डिजिटल युग में मोबाइल अथवा कंप्यूटर में आसानी से उपलब्ध है। उन जानकारियों को पुनः यहाँ दोहराना प्रासंगिक नहीं होगा। अतः मैं इस योजना के आत्मिक पृष्ठ पर अपनी कलम की नोक रखना चाहता हूँ।

केरियर के तौर पर विद्यार्थी प्रोफेशनल, प्रशासनिक अथवा अन्य किसी सरकारी सेवा में जाने की प्राथमिकता रखता है। तत्पश्चात् सुरक्षा सेवाओं में जाने की रुचि रखने वाले पुलिस, सीआरपीएफ और बीएसएफ में जाने का प्रयास करते हैं। यह सब उम्र के इसी पड़ाव पर होता है। वहाँ सफलता मिलने पर 4 वर्ष बाद वापस सेवा मुक्त होने का विषय नहीं है। इसके बावजूद सेना में जाने के लिए लाखों विद्यार्थियों ने 'अग्निपथ' योजना का मार्ग अपनाया है। इसके पीछे मूल कारण है, युवाओं में सेना की वर्दी धारण करने का अपरिमित उत्साह। मैंने कभी लिखा था कि -

"इस वर्दी में तासीर वतन की जानो तो।
त्याग-समर्पण की मर्यादा पहचानो तो।
वर्दी महज सिपाही का गणवेश नहीं है।
वर्दी क्या जिसके धागों में देश नहीं है।
बलिदानों के बागों से बनती है वर्दी।
जलते हुए चिरागों से बनती है वर्दी।
कर्तव्यों के धागों से बनती है वर्दी।
राष्ट्रगीत की रागों से बनती है वर्दी।"

एक सैनिक जब सेना की वर्दी धारण करता तो उसके मन, वचन तथा कर्म की अवधारणा पृथक हो जाती है। इस तपस्थली का वरण करने के कारण तो भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, किंतु सामान्य तौर पर सैनिक-प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु में वर्दी के संस्कार प्रबल हो जाते हैं। एक तरफ वर्दी अपनी भाषा में सैनिक के व्यक्तित्व का परिचय कराने लगती है, और दूसरी तरफ सैनिक को वतन की तासीर से अवगत कराने लगती है। समर्पण और सेवा के भावों को मुखर करने लगती है। अनुशासन की स्थापना और स्वाभिमान का जागरण करने लगती है। त्याग-बलिदान के बागों की सुगंध से सैनिक का मन सदैव महकता रहता है। उसके मन में देश-सेवा करने की प्रगाढ़ लौ प्रज्वलित हो जाती है। वर्दी धारण करने वाले सैनिक के नागरिक कर्तव्य, राष्ट्रगीत की राग में गुनगुनाते हुए उसके मस्तिष्क के माध्यम से अवचेतन मन तक उतर जाते हैं। वर्दी का भान उसे सैनिक होने की गौरवशाली अनुभूति कराता है। इसलिए वर्दीधारी सैनिक आम आदमी से कुछ अलग हटकर समाज

के पटल पर मुखरित हो जाता है। समाज का आम व्यक्ति अपने भीतर से देश के प्रहरी का विशिष्ट सम्मान इसीलिए तो सैनिक के चरणों में समर्पित करता हुआ श्रद्धा भाव से झुक जाता है।

इस बात से कौन अनभिज्ञ होगा कि कोई वीर अभिनंदन अपनी ज़िंदगी दाँव पर लगाकर जब जीवित भारत लौटता है, तो पूरा वतन उसकी कैसे अगवानी करता है। कौन अनभिज्ञ होगा कि कोई हनुमनथप्पा सात दिन बाद बर्फ की शिलाओं से साँस लेता हुआ बाहर आता है तो देश के कितने मंदिरों में महामृत्युञ्जय के मंत्र गूँजने लगते हैं। 'ये दिल माँगे मोर' कहकर वतन पर प्राण उत्सर्ग कर देने वाले कै. विक्रम बत्रा को परमवीर चक्र देने वाला सवा सौ करोड़ का वतन उसकी शहादत के बाद भी रोम-रोम से क्यों सैल्यूट करने लगता है। कोई लैफ्टिनेंट मनोज पाण्डे जब परमवीर चक्र पाने की अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के पश्चात् तिरंगा लपेटकर लखनऊ में अपनी अंतिम यात्रा पर निकलता है तो उस यात्रा में शामिल लाखों लोग 'ज़िंदाबाद' के नारे गुँजाकर इतने आँसू क्यों बहा देते हैं।

सत्रह गोलियाँ खाकर करगिल में दुश्मनों को धूल चटाने वाले किसी परमवीर योद्धा योगेन्द्र सिंह यादव को गणतंत्र और स्वतंत्रता दिवस के मौके पर होने वाली लालकिले की परेड में सबसे आगे खड़ा करके तिरंगा झंडा हाथ में आखिर क्यों थमा दिया जाता है। परमवीर रायफलमैन संजय कुमार और परमवीर योगेन्द्र सिंह यादव को टीवी चैनल पर अपने कार्यक्रम 'कौन बनेगा करोड़पति' में बुलाकर अपनी सीट से उठकर अमिताभ बच्चन सैल्यूट क्यों करता है। अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं, जो वर्दी के 'अग्निपथ' की यात्रा को प्रकर्ष के ऐसे गुरुशिखर तक पहुँचाते हैं। वही तो पगडंडी है 'अग्निपथ' और वही पथिक है 'अग्निवीर'।

अग्निवीर' होने के लिए 'अग्निवीर' जैसा मन का सुदृढ़ विश्वास होना चाहिए, 'अग्निवीर' जैसा त्याग और समर्पण का भाव होना चाहिए, 'अग्निवीर' जैसा दैहिक और मानसिक सामर्थ्य होना चाहिए और पग-पग पर 'अग्निवीर' जैसा आचरण भी होना चाहिए। वरना, यह 'अग्निपथ' योजना हमारे लिए नहीं है। यह तो इतना बड़ा अवसर है कि एक साधारण नागरिक होकर भी 'अग्निपथ' के माध्यम से आप सीधे देश के शीर्षक और अस्तित्व के साथ जुड़ जाते हैं या यूँ कहूँ कि आत्मसात हो जाते हैं। सब जानते हैं कि प्रतिष्ठा के तौर पर भी सेना का स्थान देश की सुरक्षा सेवाओं में सर्वोच्च माना जाता है। लेकिन अपने स्वार्थ के बोझ तले दबकर जीवन का नक्शा बनाने वाले लोग योग्य और सक्षम होकर भी 'अग्निपथ' के पथिक नहीं हो सकते। इसलिए मुझे स्पष्ट रूप से शीर्षक लिखना पड़ा कि देश के प्रति समर्पण के भाव से होकर गुजरता है 'अग्निवीर' का 'अग्निपथ'। शीर्षक इतना स्पष्ट इसीलिए है कि यदि देश के प्रति समर्पण का भाव-बीज ही भीतर नहीं है, ऐसे विद्यार्थी को यह आलेख यहाँ तक पढ़कर समय खराब करने की आवश्यकता ही क्यों पड़े? लेकिन यह भी संभव है कि यहाँ तक पढ़ लेने के पश्चात् जिस भाव-बीज का अवतरण हृदय में हुआ है, आप उसे खाद-पानी देने का मन बना रहे हों। अतः स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि चार वर्ष के 'अग्निवीर' अपने कौशल और सामर्थ्य से इस पाथेय के प्रकर्ष को भी कर सकते हैं और चाहें तो वर्दी से अलंकृत अपनी क्षमताओं को जीवन के अन्य महत्वाकांक्षी मार्ग पर आजमा सकते हैं। ऐसा होने पर सेना के प्रशिक्षित अधिकांश देशभक्त और ईमानदार 'अग्निवीर' अन्य क्षेत्रों में सामान्य तौर पर देश में व्याप्त भ्रष्टाचार का विरोध करेंगे, क्योंकि वे स्वयं भ्रष्टाचारी नहीं होंगे। सोचकर देखिए! एक दशक बाद जब लाखों 'अग्निवीर' विभिन्न सेवा-क्षेत्रों में जाकर ऐसा शुचितापूर्ण आचरण करेंगे, तो देश की तस्वीर कितनी उजली हो जाएगी। क्यों नहीं खुला आकाश बाहें फैलाकर आपका स्वागत और सत्कार करेगा। क्यों नहीं सभी दिशाएँ मुस्कुराकर आपका सम्मान करेंगी। निःसंदेह भारत के बच्चे-बच्चे में तब शुचिता की भावनाओं का ज्वार उमड़ेगा। लेकिन यथार्थ यह है कि प्रेरणा के पुंज का प्रकाश नजरिए और आत्मविश्वास के पहियों पर चलता है। आपके भीतर यदि वतन के लिए समर्पित सैनिक विद्यमान है तो आपको 'अग्निवीर' बनने से कोई रोक नहीं सकता। बारिश की कामना के लिए हवन करने निकला साधक छाता लेकर घर से निकलता है, तो मेघ भी बारिश करने पर विवश हो जाते हैं। शर्त यही है कि इस कामना में भी मूलतः समर्पण का ही भाव निहित हो।

शिक्षाविद डॉ शंभूनाथ तिवारी की इन पंक्तियों का उल्लेख करके ही यह आलेख संपूर्ण हो सकता है -

"क़दम बढ़ाओ तो मंज़िल तुम्हारी है वर्ना, ज़माना कब किसी का इंतज़ार करता है। जिसे यकीन है अपनी उड़ान पर दिल से, फ़लक को वही परिंदा पार करता है।"

Notes on ayurveda

Part - 9

By Vinod Haritwal

Pitta Dosha and its Subtypes

Pitta is a force created by Agni (heat energy) and Aapah (formless fluids). This force represents transformation. Pitta transforms raw substances to a state identifiable by the body. Just as the summer heat [Agni] transforms sea water to rain, and age transforms youth to adult, similarly Pitta in the human body transforms life in various aetiologies towards physical death. Of the universal qualities, Pitta dosha has predominance of Sattva.

Pitta dosha, is responsible for transformation. It is a force that is responsible for converting mass into forms. It is a force which creates planets, cells, plants and all entities from a primary source. It transforms raw energy into a usable form for each entity. For example it converts food to digestive juice, sea water to rain water, etc.

To understand Pitta dosha from a human perspective we need to understand its functions which are:

Digestion
Maintenance of body temperature
Metabolism of tissues
Vision
Hunger
Thirst
Aura / Luster
Dhaaran or Retention aspect of memory (there are three aspects of memory - grasping power, retention and recollection)
Courage
Bravery
Fear
Anger
Ignorance
Delusion or perplexity
Suppleness
Softness

Pitta dosha's prime seats of location in a human body are:

Navel region.
Stomach and Small intestine
Sweat
Rasa Dhatu (Plasma, Lymph) (we haven't discussed Dhatus which will be the next topic after Doshas)
Rakta Dhatu (Blood)
Eyes
Skin

It is centred in the parts of abdomen around the navel or the small intestine and stomach.

The pathology of Pitta dosha can be studied through its increase or decrease in the body. Since Pitta dosha governs transformation of raw energy into usable form, its increase logically would cause too much consumption of raw sources and produce a not so usable end product. For example, increased Pitta may exhaust the stored energy too quickly or the end product after transformation may not be in accordance with the body and it would lead to increased heat.

The increase of Pitta dosha leads to:

Yellowing of urine, eyes, skin and stools
Increase in hunger or appetite
Increased thirst
Increased heat which creates burning sensation throughout the body
Desire for cool environments and diet
Unconsciousness

Decrease of Pitta dosha would cause an opposite reaction. The transformation process would be disrupted, leading to unusable end products leading to toxins. The metabolism would go down and growth would be stunted on physical and mental aspects of the body.

The decrease of PITTA dosha leads to:
Decreased body temperature
Decreased gastric fire/appetite
Loss of lustre
Loss of mobility/decreased mobility
Feeling cold
Different kinds of pain all over the body
Anorexia/aversion to food
Indigestion
Coarseness of body parts

The Five Forms or Sub-types of Pitta

Pitta dosha carries out its various functions through its five subtypes. They are:

Sadhaka (साधक)
Alochaka (अलोचक)
Pachaka (पाचक)
Bhrajaka (भ्राजक)
Ranjaka (रंजक)

They are sometimes referred to as Agnis or forms of fire, as they all serve to provide or promote heat on some level.

Sadhaka Pitta

Sadhaka originates from the root "sadh" meaning "to accomplish or to realize". Sadhaka Pitta means the fire that determines the truth or reality. It is said to be located in the Hridaya. Hridaya can be deciphered as both the brain and heart. Sadhaka Pitta functions through the nervous system and senses. Like Prana Vayu it has an inward movement. It provides the fire and digestive capacity to the brain and senses. When impaired, we suffer from lack of clarity, confusion or delusion and become unable to distinguish between our fantasies and reality. Sadhaka Pitta governs our mental energy, mental digestion (the digestion of impressions, ideas or beliefs) and our power of discrimination.

Our intellect (buddhi) functions through it. It governs inner combustion, the release of energy from our impressions and life-experiences to empower the mind. It directs our intellect within. It helps to accomplish the goals of the intellect, mind or ego. On a lower level, these include worldly goals of pleasure, wealth and prestige and, on a higher level, the spiritual goal of liberation.

Alochaka Pitta

Alochak originates from the root "loch" meaning "eye". Alochaka Pitta means the fire that governs visual perception. It is located in the eyes. Clearness of the eyes reflects a good digestive power and deeper intelligence (sattva). Like Udana Vayu it has upward motion. Responsible for the reception and digestion of light from the external world. Centred in the pupil of the eyes, it allows us to see. When impaired, we suffer from failure of vision or eye diseases.

Pachaka Pitta

Pachaka originates in the root "pach" meaning "to digest". Pachaka Pitta means the form of Pitta (fire) that digests things (pachati). It is located in the small intestine. It governs the power of digestion. From it comes the bile salts and acids that digest our food. In addition, it governs the regulation of body temperature and helps maintain the power of circulation. When impaired, we suffer from indigestion. This consists of hyperacidity and ulcers when it is high. When it is low, we have poor absorption, lack of bodily heat, and low agni or digestive fire. Pachaka Pitta is the basis and support of the other forms of Pitta.

Pachaka Pitta is the first consideration in the treatment of Pitta, as our primary source of heat is the digestive fire, Agni, with which this form of Pitta is intimately bound. Like Samana Vayu, it has mainly an equalizing or balancing action and discriminates the nutrient from the non-nutrient part of food. It is responsible both for building up our tissues and for destroying any pathogens that have entered the body with the food.

Bhrajaka Pitta

Bhrajaka originates from the root "Bhraj" meaning "to shine" or "lustre". Bhrajaka Pitta means the fire that governs luster or complexion. It is located in the skin and maintains complexion and lustre of skin. It governs our digestion of warmth or heat and sunlight, which we absorb through the skin. Through it we can read the heat and warmth of the body generally, the glow of our aura. Like Vyana Vayu, it is involved in the process of circulation and has an outward moving energy. It is like the warmth of our peripheral circulation. Through it our heat is diffused and dispersed. When increased it causes sweating.

Ranjaka Pitta

Ranjaka is originated from the root "ranjan" meaning "to colour". Ranjaka Pitta means the form of fire that imparts colour. It is located in the liver, spleen, stomach and small intestine. Gives colour to the blood, bile and stool. It primarily resides in the blood and is involved in most liver disorders. It functions as the warmth in the blood and the circulatory system. Like Apana Vayu, it has a downward moving energy and can promote / purge toxins. Accumulated Pitta gives yellow colours to the other secretions and waste materials of the body, particularly urine and faeces.

Secure yourself & your family against DENGUE, CHIKUNGUNYA and COVID's NEW VARIANT !!

BE RESPONSIBLE AND BUY

HEALTH INSURANCE

Call Me For More Details

Adity Rahul Dadheech

8108973815

aditydadheech@outlook.com

मेरी थार यात्रा भाग-३

-अंकिता कुदाल

नमस्कार,
पिछली बुलेटिन में मैंने आपसे जैसलमेर के किले, पटवों की हवेली और लोंगे वाला युद्ध स्थल के अनुभव साझा किए थे। लोंगे वाला युद्ध स्थल के बाद हम तनोट माता के मंदिर दर्शन के लिए गए। यह मंदिर जैसलमेर से लगभग १२० किलोमीटर दूर है। तनोट माता के मंदिर को थार की वैष्णो देवी के नाम से भी जाना जाता है। माना गया है कि भारत पाकिस्तान के मध्य जो सितंबर १९६५ को लड़ाई हुई थी, उसमें पाकिस्तान के सैनिकों ने मंदिर पर कई बम गिराए थे लेकिन मंदिर में एक भी बम नहीं फट सका। सभी बम बेअसर हो गए। इस घटना की याद में तनोट माता मंदिर के संग्रहालय में आज भी पाकिस्तान की ओर से दागे गए जिंदा बम रखे हुए हैं। इस मंदिर के सामने भारत की पाकिस्तान पर १९६५ ईस्वी की विजय का प्रतीक विजय स्तंभ स्थित है। तनोट माता के दर्शन के बाद हम वापस कैंप पहुंचे। थोड़ी देर आराम किया और शाम को जीप सफारी और कैमल सफारी के लिए निकले। जीप सफारी मेरे लिए काफी एडवेंचरस था। जीप सफारी की राइड में कभी नहीं भूल सकती। मेरे सभी भाई _बहिनों को जीप सफारी की राइड में बहुत मज़ा आ रहा था बस मैं ही ऐसी जिसे बहुत डर लग रहा था। इतनी तेज हवा और इतनी फास्ट राइड का एक्सपीरियंस मैने आज तक नहीं किया था। जीप सफारी के बाद हमने कैमल सफारी की। रेत के टीलों पर घर बनाकर हमने अपने बचपन की यादें ताजा की। हमने अलग-अलग गेम्स खेले। रेगिस्तान के बीच सनसेट देखा। सूर्यास्त हो चुका था। फिर कैंप फायर हुआ। हम लोगों ने खूब डांस और मस्ती की। अगली सुबह हम रामदेवरा के लिए रवाना हुए।

रामदेवरा _ यह गांव जोधपुर_ जैसलमेर मार्ग पर पोखरण से १२ किलोमीटर दूर स्थित है। रामदेवरा रुणेचा के नाम से भी जाना जाता है। यहां बाबा रामदेव जी का विख्यात मंदिर है। यहां स्थित मंदिर का निर्माण सन् १९३१ में बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने करवाया था। रामदेव जी को हिंदुओं द्वारा भगवान कृष्ण का अवतार माना जाता है और मुसलमानों द्वारा उन्हें रामशाह पीर के रूप में जाना जाता है। रामदेव जी ने अपनी भतीजी को पोकरण दहेज में दिया था। इन्होंने कामड़िया पंथ चलाया था। रामदेव जी के मेले पर कामड़िया पंथ की महिलाओं द्वारा तेरहताली नृत्य किया जाता है। कहा जाता है कि रामदेव जी के मंदिर के सामने उनकी बहन डाली बाई ने एक दिन पहले समाधि ली थी। रामदेव जी ने बाल्यावस्था में सातलमेर नामक स्थान पर भैरव राक्षस का वध किया था। रामदेव जी एक ऐसे संत थे जिन्होंने अपना जीवन समाज के दलित लोगों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया था । यहां हर साल अगस्त _सितंबर के दौरान रामदेवरा मेले का आयोजन होता है, जिसमें भारी संख्या में भक्त शामिल होते हैं। रामदेव जी के मंदिर के दर्शन के बाद हम जोधपुर के लिए रवाना हुए।

जोधपुर जिसे मरुस्थल का प्रवेश द्वार, ब्लू सिटी और सन सिटी के नाम से भी जाना जाता है। यहां हमने जोधपुर का किला देखा जिसे मेहरानगढ़ के नाम से भी जाना जाता है। यह दुर्ग चिड़ियाटूक पहाड़ी पर बना हुआ है। इसकी स्थापना राव जोधा ने १४५९ ई. में की थी। राव जोधा इस दुर्ग को मसूरिया की पहाड़ी पर बनवाना चाहते थे लेकिन वहां पानी की कमी के कारण पंचेटिया पर्वत को दुर्ग निर्माण के लिए उपयुक्त समझा गया। वहां एक झरना बहता था जहां चिड़िया नाथ नामक योगी रहता था। दुर्ग निर्माण के कारण योगी क्रोधित होकर धूणे के अंगारे झोली में भरकर वहां से चला गया। उसने राजा को श्राप दिया कि जिस पानी के कारण मुझे यह स्थान छोड़ना पड़ा है वह पानी तुझे भी नसीब नहीं होगा। जब दुर्ग का निर्माण पूरा हुआ तो जोधा ने साधु की कुटिया वाले स्थान पर एक कुंड और छोटा शिव मंदिर निर्मित कराया। दुर्ग की नींव में राजिया/राजाराम नामक व्यक्ति को जिंदा चुनवाया गया था, ताकि दुर्ग सदैव जोधपुर राजवंश के अधिकार में बना रहे। मयूरध्वजगढ़ व गढ़ चिंतामणी इसके उपनाम है। रूपयार्ड किपलिंग (पत्रकार)ने कहा था- "यह दुर्ग मानव द्वारा नहीं बल्कि देवताओं और परियों द्वारा निर्मित किया गया है।" टाइम्स पत्रिका ने इसे "एशिया का सर्वश्रेष्ठ दुर्ग" कहा है।

जोधपुर का किला देखने के बाद हम बाजार देखने के लिए रवाना हुए। यहां रंगाई, छपाई, बंधेज, जूतियां, जटपट्टी एवं सालावास की दरिया, कसीदे की जूतियां, लकड़ी के झूले बहुत प्रसिद्ध है। जोधपुर की कचौड़ीयां भी हमें बहुत अच्छी लगी। जोधपुर में बंधेज का काम भी बहुत अच्छा होता हैं इसलिए इसे बंधेज मंडी भी कहा जाता है। जोधपुर घूमने के बाद हम सभी वापस अपने घर की ओर रवाना हुए।

आत्मीय कृतज्ञता के साथ मैं हर उस व्यक्ति को धन्यवाद देना चाहती हूं जिन्होंने मेरी थार यात्रा के लेखों को पढ़ा। मैं देवेश सर को धन्यवाद देना चाहती हुं जिन्होंने मुझे थार यात्रा के मेरे अनुभव को लिखने एवम् आप सभी के साथ साझा करने के लिए प्रेरित किया। मैं अपने घर के बड़ो को धन्यवाद देना चाहती हुं जो बचपन से हमें नई नई जगहों पर घुमाने ले जाते हैं और कुछ नया सिखाते हैं। मैं उन सभी व्यक्तियों को धन्यवाद देना चाहती हूं जिन्होंने मुझे मेरे लेख को पढ़ने के बाद मुझे प्रेरित, उत्साहित और ऊर्जावान बनाए रखा। अपनी थार यात्रा के लेख को विराम देते हुए मैं इसे संक्षिप्त तौर पर एक कविता के रूप में व्यक्त करना चाहती हूं_

हंसते गाते बीत गए वो दिन
सुनहरी यादों संग बीत वो दिन
कैमल सफारी जीप सफारी संग बीत गए वो दिन
जैसलमेर किले और पटवो की हवेली संग बीत गए वो दिन
मेहरानगढ़ और जोधपुर की कचौरी संग बीत गए वो दिन
रणकपुर और चारभुजा जी के दर्शन संग बीत गए वो दिन
बच्चों की मस्ती और लड़ाई संग बीत गए वो दिन
बड़ो की समझदारी संग बीत गए वो दिन
डेजर्ट डांस संग बीत गए वो दिन
अब कुछ यादें और पिक्चर्स है हमारे साथ
अब हमेशा याद आयेंगे वो बीते हुए दिन

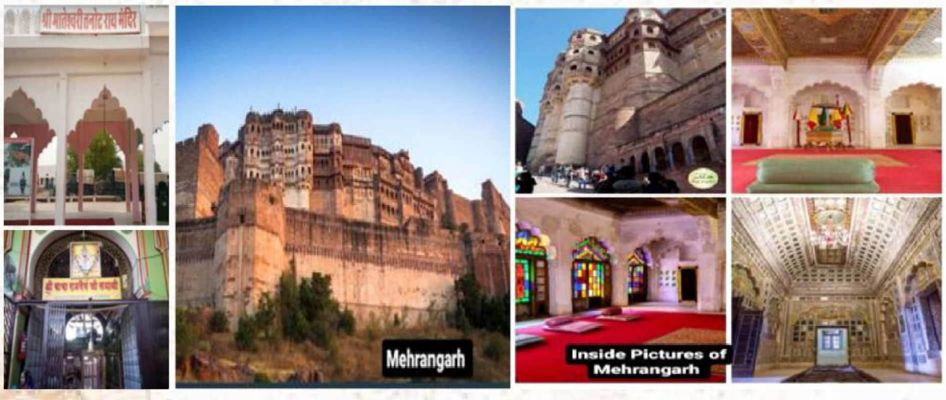

Arya Asopa

CAREER IN CHARTERED ACCOUNTANCY

FOR DADHICH GIRLS

With changing times, women of the country are becoming more aware of their strengths. Finally, the women have started to realise how vital the need to become educated and independent is.

It is rightly quoted, “If you educate a man, you educate an individual.. If you educate a woman, you educate a nation.” And women, are now realising the value of higher education and are willing to invest a few more years of their lives to educating themselves, getting out of their comfort zones and even leaving their hometowns to fulfil their dreams and ambitions.

It has been increasingly noticed that women have walked shoulder to shoulder with men in all fields including defence, engineering, space research, etc. The field of chartered accountancy is no exception to this trend. The huge scope and opportunities in the field of accountancy has attracted many women to enter and excel in the traditionally male-dominated bastion. According to data provided by the ICAI, 26% of ICAI's total members are women which totals to around 89,000 up till 2022. Similarly, 40% of the active students of ICAI are female candidates. These figures indicate that women are giving tough competition to male counterparts in the accounting field.

As we know, Chartered Accountancy offers many career opportunities for women. Career in chartered accountancy is equally beneficial whether a candidate is looking for escalation in a corporate job, great financial rewards or self-employment opportunity. There are few valid benefits which women in our community and women, in general can avail by choosing Chartered Accountancy as a career option, which are as follows:

1. Greater Flexibility with Self Employment Opportunity:

The career path of a woman is often different from her male counterpart as society always makes her feel that she has a greater responsibility towards her family. She may have to take a break from career when she has young children to rear. Even though things are changing in our community as well, there are still greater expectations from women compared to men. In other words, work-life balance is more critical for women as compared to men. Chartered Accountancy is a career path which provides greater flexibility in terms of self-employment as compared to other fields. A qualified CA can start her own accountancy practice or simply take consulting assignments as per her convenience.

2. Scope in Academics:

Qualified CAs are also in great demand in education field be it universities or private coaching institutions. A qualified CA can earn well without investing much time into the profession. Hence, managing work-life balance would be easier than ever.

3. Job Opportunity in the Traditional Areas of Accounting:

It goes without saying that scope and demand for CAs in Taxation and Audit are ever increasing. It would not be difficult for a female candidate to find a job in some good company in taxation or audit profiles. Moreover, she can switch between job and self-employment without reflecting any career break in the resume.

4. Opportunity at the top management positions:

Demand for female executives at top management positions like CEO, CFO, Vice-president etc is on the rise. Being a qualified chartered accountant will prove to be an additional advantage as no one understands a business more deeply than a chartered accountant. The qualified women CA have greater chance to get selected at board level positions as compared to their non-CA counterparts. Hence, being a CA is of great value at top management positions.

Women have excelled in all fields including traditionally male-dominated fields like engineering or space science. However, considering the work-life balance requirement of women, chartered accountancy proves to be the best career path for women. Chartered Accountancy is the only career choice which provides great career opportunity in terms of entrepreneurship as well as in employment sector. It offers good financial rewards without compromising work-life balance. For all the fellow Dadhich girls, It is undoubtedly inspiring to know that around 18% women in our community have already realised the value CAs have, the value of education and independence, and the benefits of the profession. Consequently, more women in the community are on the path to become a Chartered Accountant.

In the end, I would like to state that “There is no greater pillar of stability than a strong, free and educated woman.”
Jai Dadhichi.

DMART OF ALL

FINANCIAL SERVICES

RJ CONSULTANCY SERVICES

WORK SMARTER, NOT HARDER

- INCOME TAX
- GST
- SHAREMARKET
- MUTUAL FUND
- INSURANCE
- LOAN
- FINANCIAL ADVICE

AND MANY MORE

ALL FINANCIAL SERVICE UNDER ONE ROOF

RAHUL KAILASH SHARMA

FINANCIAL ADVISOR

RJ Consultancy Services

Shop No.08, Shubh Apt.,Subhash Nagar, Ramdev Park Road,

Miraroad East. Thane - 401 107.07.

+91 97735 84709 / 97682 23910

www.rjcs.in rjcs_financial_Updates

चिंतन

रमेश चंद्र दाधीच
निमोला वाले, कोटा

किसी भी विषय पर चिंतन अति आवश्यक है चिंतन से चित्त की विचारधारा ओ पर काफी प्रभाव पड़ता है।हम गत दशकों को देख चुके हैं जिसमे हमारे पूर्वज को देखा है कि वो किसी भी निर्णय को करने से पूर्व गम्भीरता पूर्वक विचार करते थे उसके बाद ही वह सम्बन्धित कार्य किया करते थे और तत्कालीन समय में उन्हें किसी भी प्रकार की सामाजिक ,पारिवारिक कठिनाई का सामना न करना पड़ता था जिससे उनका व्यक्ति गत जीवन बड़ा ही स्वस्थ व प्रसन्नता पूर्वक रहता था ,साथ ही मन शुद्ध आत्मिकता, से भरा होने से किसी भी प्रकार के रोग से प्रभावित नही होता था ।सामूहिक परिवार में जीवन यापन होता था जिससे एक दूसरे का सहयोग से आत्मबल ,मनोबल का अदुतीय लाभ मिलता था ।किसी भी प्रकार के सामाजिक पद की लालसा नहीं रखते थे परन्तु गत दशकों में पाश्चात्य प्रभाव के कारण हमारे देश के समाजों पर विपरीत प्रभाव पड़ा उसका कारण हम स्वयं हैं ।हमने हमारे पूर्वजों के मार्गदर्शन पर न चल कर अशलील पश्चात्य चलन को अपना लिया ,जिसका दुषपरिणाम देश के लोगो को भोगना पड़ रहा है जिससे आजप्रत्येकसमाज का हर तकबा किसी न किसी स्तर पर प्रभावित है । इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से भले हम सम्रद्ध हों पर हमारी संस्कारिक ता गोन होने के कगार पर हैं ।

हमने देखा है कि पहले कुटुम्ब परिवार का आपस में लगाव था छोटे बच्चे भी उनके सम्पर्क में आते थेओर उनके जीवन के अनुभव सुनते थे जिससे वह संस्कारिक होते थे ओर रबुजर्गो का सम्मान करते थे परन्तु आज के बच्चो के लिये परिवार की परिभाषा में माता पिता व उनके बच्चे ही परिवार तक सीमित हैं ,जिसके अभाव में बच्चे क्या माता पिता ही संस्कारो से वंचित हैं ऐसी स्थिति में बच्चे मीडिया के दुरा स्वयं विदेशी संस्क्रति अपना रहे हैं जिसे हम अनदेखा कर रहे हैं और उसके परिणाम भुगत रहे हैं ।जिससे बच्चे कोई भी निर्णय स्वयं लेते हैं और उनकी गति विधियों को देख कर हम को मोन रखने हेतु बाध्य होना पड़ता है ओर पश्चाताप होता है कि हम बच्चों को बुजुर्गो के सानिध्य में रखते तो आज हमें यह दिन नहीं देखने पड़ते।। ,अब क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत ।। यही कारण है कि आने वाली पीढ़ी बुजुर्गो का सम्मान नहीं कर रही ।वैसे कुछ लोग गति शील हैं तो वह केवल समाज मैं अपना वर्चस्व कायम करने के पूरे प्रयास रत्न में लगे रहते हैं की प्राप्त पद हमेशा कायम रहे ,ऐसी विचारधारा से समाजो में विरोधाभास हो रहा है जो हमारे लिये बहुत ही गम्भीरता का विषय व चिन्तनीय है ।

PHONICS THE ART OF READING

-Netal Palod

It was very surprising for me when a child studying in std III rd who was very weak in reading was able to read when I introduced him the technique of reading called phonics phonics is a method of teaching people how to read and write an alphabetic language. The alphabet is made up of 26 letters, 5 of which are vowels (a, e, i, o, u) and the rest of which are consonants. A vowel is a sound made by allowing breath to flow out of the mouth, without closing any part of the mouth. There are two main parts of Phonics Synthetic phonics and the analytic phonics. In the synthetic method children learn to make connections between the letters of written texts and the sounds of spoken language. For example, in the word bat, a child learn to identify three individual phonemes.

With analytic phonics, children are taught to recognise whole words by sight and later to break down the word into the smaller units of sound, Letter sounds are taught after reading has begin. Children are taught to blend sounds in order to read, as well as how to spell. They learn this through variety of games, fun and activities.

Phonics is considered as the best way to teach children to read. Teachers teaches the children to pronounce the letters by singing songs and many other funny ways just like A is read ए.
C is read as क. As the pupils learn new sounds and parts of words through phonic reading, they will be able to decode words that they might not have encountered before. Identifying the sounds is an important skill that will help children to gain reading fluency.

Children begin devloping their listening skills, so that they are tuned into the different sounds in words. Being able to listen and identify sounds is crucial in speech awareness and will really help children to enhance their comprehension skills...

वृक्षत्व

श्रीनरेश मेहता

माधवी के नीचे बैठा था
कि हठात् विशाखा हवा आई
और फूलों का एक गुच्छ मुझ पर झर उठा,
माधवी का यह वृक्षत्व
मुझे आकण्ठ सुगंधित कर गया।

उस दिन एक भिखारी ने भीख के लिए
ही तो गुहारा था और मैंने द्धारचार में उसे क्या दिया ?
उपेक्षा, तिरस्कार और शायद ढेर से अपशब्द ।
मेरे वृक्षत्व के इन फूलों ने
निश्चय ही उसे कुछ तो किया ही होगा,
पर सुगंधित तो नहीं की।
सबका अपना-अपना वृक्षत्व है।

नई मुहिम –

दाधीच इंटरनेशनल ट्रेड फाउंडेशन 70 वर्ष से अधिक आयु के प्रबुद्ध जन को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान करने जा रहा है। अत: जो सम्माननीय जन निम्न अर्हताएँ पूर्ण करते हैं उन्हें अवश्य नामित करें।

1. आप केवल दाधीच व्यक्तियों को नामांकित कर सकते हैं जिनके पास सामाजिक कार्य, कला, विज्ञान या वाणिज्य के क्षेत्र में कम से कम 10 वर्षों की प्रलेखित उपलब्धियां हैं। और हमारे समुदाय पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला हो।

2) स्व-नामांकन स्वीकार नहीं किए जाते हैं।

नाम का अंतिम नामांकन 3 चुनिंदा जूरी सदस्यों द्वारा तय किया जाएगा जिनका निर्णय अंतिम होगा।

अत: अपना नामांकन मुझे 919167767699 नंबर पर शनिवार 8 अप्रैल,2023 शाम 5 बजे या उससे पहले अवश्य प्रेषित करें।

--शशि दायमा

- मेष राशि : राशि में आने वाला गुरु रवि तरक्की देने वाला है | अमावस्या के आसपास नुकसानदायक रहेगा
- वृषभ राशि : खर्चा कराने वाला और मन को अशांत कराने वाला वक्त रहेगा | पारिवारिक झगड़े बढ़ सकते हैं |
- मिथुन राशि : राशि का मंगल अमंगल करेगा, पति पत्नी में मनमुटाव होगा | गाड़ी धीमी चलाएं |
- कर्क राशि : व्यवसाय के लिए धन हानि हो सकती है | नौकरी व्यवसाय में रुकावटें आयेगी | आपसी शत्रु बढ़ेंगे |
- सिंह राशि : गुरु रवि तकलीफ दायक फल प्रदान करेंगे | सरकारी कामकाज में रुकावटें आएंगी |
- कन्या राशि : अष्टम का राहु अनिष्ट फल प्रदान करेगा | और सरकारी कार्य पूरे होंगे
- तुला राशि : पति पत्नी में मनमुटाव रहेगा | शारीरिक कष्ट बढ़ेगा | गर्मी से सावधान रहिएगा |
- वृश्चिक राशि : संतान को कष्ट रहेगा | खर्चा अधिक होगा | गाड़ी धीमी चलाएं |
- धनु राशि : सरकारी कामकाज आगे बढ़ेंगे | कोई नई चीज़ खरीदी होगी | समय लाभदायक होगा |
- मकर राशि : व्यवसाय में वृद्धि होगी | माता पिता को कष्ट होगा | रुके हुए कार्य पूरे होंगे |
- कुंभ राशि : पारिवारिक कलह बढ़ेगा | खर्चा अधिक होगा | शारीरिक कष्ट होगा |
- मीन राशि : शरीर पीड़ा रहेंगी | व्यवसाय नौकरी में नुकसान कारक हित शत्रु बढ़ेंगे |